sankalp1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:38 PM Page 91

उच्चतम स्थान को रिक्त करने के बाद शून्य से प्रारंभ कर फिर उसी ऊंचाई पर पहुंचने के लिए आवश्यकता होती है संकल्प की, तपस्या की। राजनीतिक क्षेत्र की उन ऊंचाइयों पर पहुंचने के बाद उन्हें एक ही झटके में त्याग देने का माद्दा सिर्फ नानाजी जैसे व्यक्ति में ही हो सकता था। सत्ताकेंद्रित राजनीति से समाजकेंद्रित गतिविधियों को अपने जीवन का उद्देश्य बना कर उन्होंने दीनदयाल जी के एकात्म मानवदर्शन को मूर्त रूप देने के लिए जेपी की समग्र क्रांति की राह पकड़ ली थी। एक नए अवतार में आ गए थे नानाजी .....

नए अवतार में नानाजी